International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 21-10-2021; Accepted: 06-11-2021; Published: 22-11-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 29-31

हाथरस जनपद में कृषि विकास के अर्न्तगत भूमि उपयोग का एक प्रतीक अध्ययन

मुन्ना लाल, मधु यादव, वीरेन्द्र सिंह
भूगोल विभाग, किशोरी रमण पी0 जी0 कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हाथरस जनपद में कृषि विकास के अन्तर्गत भूमि उपयोग का क्षेत्रफल कितना है। भूमि उपयोग तथा इसके प्रारूपों में परिवर्तन के फलस्वरूप जनसंख्या तथा भूमि के बीच संबंधों के संदर्भ में जटिल समस्याओं के प्रति चिन्तन, मनन एवं निर्वचन हेतु हमें वाध्य करते हैं। अतः इस शोध पत्र के द्वारा हाथरस जनपद में भूमि उपयोग का अध्ययन किया गया है। सिंचाई के साधनों से उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो रही हैं, वनों के विनाश से मृदा का विनाश हो रहा है। कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल में वृद्धि हो रही है, लेकिन अन्य भूमि धीरे–धीरे कम होती जा रही है।

मूल शब्दः कृषि विकास, भूमि उपयोग, कृषि भूमि उपयोग, हाथरस जनपद

प्रस्तावना
अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश का हाथरस जनपद है, जनपद का अंक्षाशीय विस्तार 270, 180, उत्तरी अक्षांश से 270, 510, अक्षांश तक तथा 770, 530 पूर्वी देशान्तर से 780, 320 पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है। हाथरस जनपद का क्षेत्रफल 1800.13 वर्ग कि0मी0 है। प्रशासनिक दृष्टि से आगरा मण्डल के इस हाथरस जनपद में चार तहसीलें –हाथरस, सादाबाद, सिकन्दराराउ, सासनी तथा सात विकासखण्ड– हाथरस, सामली, सादाबाद, सहपऊ, सिकन्दराराऊ व हसायन है।

अध्ययन का उद्देश्य
1. हाथरस जनपद में भूमि उपयोग का स्वरूप प्रस्तुत करना।
2. हाथरस जनपद में विकास खण्डवार भूमि उपयोग प्रारूप को प्रदर्शित करना।
3. हाथरस जनपद में कृषि के आधारभूत ढॉचा को मजबूत करने के लिए किये गये कार्यो का कृषि भूमि उपयोग पर पडते प्रभाव को ज्ञात करना।

शोध प्रविधि
अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास के आयाम एवं पर्यावरण से भूमि का स्वरूप बदला है। इन्हें ध्यान में रखकर वर्तमान अध्ययन के निम्न उद्देश्य रखे गये है, हाथरस जनपद में वर्तमान भूमि उपयोग का स्वरूप प्रस्तुत करना एवं जनपद में विकासखण्ड वार कृषि भूमि उपयोग एवं फसल प्रारूप को प्रदर्शित करना। भूमि उपयोग तथा इसके प्रारूपों में परिवर्तन के फलस्वरूप मानव तथा भूमि के बीच संबंधों के सन्दर्भ में जटिल समस्याओं के प्रति व्यापक चिन्ता इस दिशा में चिन्तन, मनन एवं निर्वचन हेतु हमें बाध्य करते है। अतः इस शोध पत्र के द्वारा हाथरस जनपद में भूमि के स्वरूप में आये परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। हाथरस जनपद में कृषि विकास और पर्यावरणीय कारकों से भूमि के स्वरूप में परिवर्तन आ रहा है। अनुकूल भौगोलिक दशाओं समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टी उत्तम जलवायु, जल संसाधन की उपलब्धता के बढ़ते दबाव के कारण हाथरस जनपद के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 70.07 भाग पर कृषि कार्य सम्पादित होता है। हाथरस जनपद के 70268 हे0 क्षेत्र (68.01 प्रतिशत) में कृषि की जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में (68.38 प्रतिशत) कृषि भूमि विस्तार है तथा नगरीय क्षेत्र में (28 प्रतिशत) का विस्तार है। सबसे अधिक कृषि भूमि सादाबाद विकासखण्ड में 65.33 प्रतिशत है। सबसे कम कृषित भूमि सहपऊ विकासखण्ड में 65.69 प्रतिशत है। जनसंख्या वितरण से सम्बन्धित ऑकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि जनसंख्या दबाव का स्पष्ट प्रभाव कृषिगत भूमि की मात्रा पर पड़ता है। परती भूमि की जुताई व उर्वरकों द्वारा मृदा का उपजाऊपन बढ़ाकर कृषि पैदावार बढ़ाई जा सकती है और पुनः इस प्रकार की भूमि पर कृषि की जा सकती है।

कृषि योग्य बंजर भूमि यह भूमि मजदूरों, सिचाई के साधनों की कमी, वर्षा आदि के अभाव के कारण खाली छोड़ दी जाती है। जनपद हाथरस में 410 हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य बंजर भूमि है। जो अध्ययन क्षेत्र के 0. 40 प्रतिशत क्षेत्रफल में स्थित है। यह भूमि सबसे अधिक हाथरस विकासखण्ड में 0.45 प्रतिशत है । जबकि सबसे कम सहपऊ विकासखण्ड में 0.29 प्रतिशत है।

चारागाह, उद्यान, वृक्ष व झाड़ियों अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित भूमि से कुछ आर्थिक उत्पादन होता है। अध्ययन क्षेत्र में 851 हेक्टेयर क्षेत्र इसके अन्तर्गत आता हैं। सबसे अधिक मुरसान विकासखण्ड में 0.70 प्रतिशत है तथा सबसे कम सहपऊ विकासखण्ड में 0.28 प्रतिशत हैं। भूमि की कम उर्वरता शक्ति, सुविधाओं का अभाव, कृषक की अभिरूचि, बाढ़ एवं सूखा आदि ऐसे कारक है जो किसी भी परती भूमि की मात्रा व स्वरूप को निर्धारित करते है। अध्ययन क्षेत्र का 12742 हेक्टेयर अर्थात् 12.36 प्रतिशत परती भूमि की श्रेणी में आता है। सबसे अधिक परती भूमि सहपऊ विकासखण्ड 13.26 प्रतिशत में है। जो जनपदीय औसत 12.36 प्रतिशत से लगभग तीन प्रतिशत अधिक है। मुरसान विकास खण्ड में 10.29 प्रतिशत परती भूमि है जो समस्त विकासखण्डों में सबसे कम है। परती भूमि संबंधी ऑकड़ों का विश्लेषण से स्पष्ट है कि परती भूमि की मात्रा व जनसंख्या दबाव, सिंचन सुविधाओं के विकास से प्रभावित है।

हाथरस जनपद में ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि 1941 हेक्टेयर भूमि (1.88 प्रतिशत) आती है। नगरीय क्षेत्रों (0.53 प्रतिशत) की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में ऊसर एवं कृषि से अयोग्य भूमि का प्रतिशत (1.89 प्रतिशत) अधिक मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक इस श्रेणी की भूमि

सासनी विकासखण्ड में 2.09 प्रतिशत अधिक है, जो जनपदीय औसतन से 1.15 गुना अधिक है तथा सबसे कम ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि सहपऊ विकासखण्ड में 1.09 प्रतिशत है। इस प्रकार की भूमि, जिसका उपयोग कृषि कार्यों के अतिरिक्त सड़क, रेलमार्ग तथा आवास आदि के काम में लिया जाता है। शुद्ध बोया गया क्षेत्र के अन्तर्गत सादाबाद विकासखण्ड में सर्वाधिक 68.23 प्रतिशत शुद्ध बोयी गयी भूमि है तथा न्यूनतम 65.69 प्रतिशत सहपऊ विकासखण्ड में दृष्टिगोचर हो रहा है। सम्पूर्ण हाथरस जनपद का शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 67.01 प्रतिशत है। जनपद में जनसंख्या वृद्धि के खाद्यान्न एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बोयी गई भूमि क्षेत्र में वृद्धि होना अच्छा संकेत है।

तालिका सं0 1: हाथरस जनपद में भूमि उपयोग (प्रतिशत में) (2017–18)

क्र0	विकासखण्ड का नाम	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	परती भूमि	कृषि योग्य बंजर भूमि	ऊसर एवं अयोग्य भूमि	चारागाह, उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियाँ	वन	अन्य कार्यों में लगी भूमि
1	मुरसान	67.09	14.99	0.40	1.39	0.70	0.13	15.16
2	हाथरस	66.64	12.46	0.45	2.17	0.54	0.08	17.83
3	सादाबाद	68.33	11.07	0.36	1.99	0.54	0.09	17.83
4	सासनी	68.11	10.29	0.43	1.98	0.54	0.12	18.33
5	सिकन्दराराऊ	67.74	12.10	0.41	2.09	0.59	0.08	16.71
6	सहपऊ	65.69	15.26	0.29	1.09	0.28	0.16	17.48
7	हसायन	66.21	14.28	0.30	1.08	0.29	0.17	17.59
योग ग्रामीण		67.38	96.24	0.40	1.89	0.54	0.10	17.03
योग नगरीय		27.37	11.68	0.00	0.58	0.30	0.00	59.68
सम्पूर्ण जनपद योग		67.01	12.36	0.40	1.88	0.54	0.10	17.42

स्त्रोत – जनपद सांख्यिकीय पुस्तिका, हाथरस।

भूमि उपयोग के संदर्भ में जनपद में रबी, खरीफ व जायद की फसलों का उत्पादन अधिक मात्रा में किया जाता है। जिसमें खरीफ में 46.09 प्रतिशत क्षेत्रफल है। विकासखण्ड हाथरस में 8.37 प्रतिशत, सादाबाद में 9.34 प्रतिशत सासनी, में 14.40 प्रतिशत, सहपऊ में 5.03 प्रतिशत, मुरसान में 4.67 प्रतिशत तथा सिकन्दराबाद में 4.15 प्रतिशत तथा हसायन में 16.16 प्रतिशत है। यहाँ प्रमुख फसलों में धान, मक्का, बाजरा, उर्द, मूँग, अरहर, तिल गेहूँ आदि है। जिसमें खाद्यान्न, दलहन, तिलहन फसलें।

रबी फसलों का कुल क्षेत्रफल का 51.57 प्रतिशत, जो जनपद के सात विकासखण्डों सिकन्दरामऊ (18.06 प्रतिशत), सादाबाद (9.74 प्रतिशत) हाथरस (7.97 प्रतिशत) मुरसान (6.89 प्रतिशत) सासनी (5.75 प्रतिशत), सहपऊ (3.00 प्रतिशत) तथा हसायन (3.5 प्रतिशत) है। जिसकी प्रमुख फसलें गेहूँ, जौ, चना, मटर, मसूर, राई, सरसों तथा अलसी आदि है। जायद की फसलों का कुल क्षेत्रफल (2.34 प्रतिशत), जिसमें हाथरस (0.65 प्रतिशत) सिकन्दरारऊ (0.4 प्रतिशत) सामरा(0.36 प्रतिशत) सादाबाद (0.35 प्रतिशत) व सहपऊ (0.33 प्रतिशत) व हसायन (0.24 प्रतिशत) विकासखण्ड में है। जिसमें खीरा, लौकी, कददू, टमाटर, बैगन आदि फसलों का उत्पादन होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र हाथरस जनपद में कृषि विकास के आयाम एवं पर्यावरणीय अध्ययन इसमें भूमि उपयोग का मूल्यांकन किया गया हैख्ए2,। अब तक प्रकाशित भूगोल की पुस्तकों व शोध कार्य में हाथरस जनपद के सन्दर्भ में भूमि उपयोग से सम्बन्धित'' शीर्षक पर साहित्य में बहुत कम पढ़ने को मिलता हैख्ए4,। सर्वप्रथम एल0डी0 स्टाम्प ने ब्रिटेन का भूमि उपयोग सर्वे करवाया था। जिसमें उन्होंने भूमि को सात वर्गों में बॉटा – कृषि भूमि, ऊसर, चारागाह, बाग, नर्सरी, घास–स्थली, जंगल और नगर क्षेत्र के अधीन भूमि। इस भूमि वर्गीकरण को स्टाम्प ने अपने प्रसिद्ध कृति ष्जैम स्ंदक वि ठतपजंपद पजे नेम ंदक डपे नेमष विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। सविन्द्र सिंह (2004) ने पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद में भूमि एवं जल संसाधन को पारिस्थितिक तंत्र का महत्व पूर्ण घटक माना तथा मृदा संरक्षण से सम्बन्धित विविध उपायों का उल्लेख किया है।

डॉ0 आर0के0 गुर्जन (1967) ने इन्दिरा गॉधी नहर परियोजना क्षेत्र में कृषि आधुनिकीकरण का अध्ययन किया। जिसमें उन्होंने 1971 से 1981 के मध्य में हुए कृषि क्रान्ति का समाजिक आकलन कर क्षेत्र में कृषि विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत किया है।

डॉ0 डी0एस0 चौहान (1966) के अनुसार प्राकृतिक पर्यावरण में भूमि प्रयोग एक तत्सामयिक प्रक्रिय है, जबकि मानवीय इच्छाओं के अनुरूप अपनाया गया भूमि – उपयोग एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है।

डॉ0 माजिद हुसैन (1976) ने कृषि उत्पादकता निर्धारण हेतु प्रदेश की प्रत्येक संघटक इकाई में बोयी गयी फसल का क्षेत्र उत्पादकता मूल्य से संबंध को आधार माना, प्रो0 हुसैन ने इस आधार पर उत्तर प्रदेश के कृषि उत्पादक प्रदेशों का निर्धारण किया (2006)ख्5,

इस प्रकार अनेक भूगोलवक्ताओं द्वारा भूमि उपयोग का अध्ययन किया लेकिन अभी भी हाथरस जनपद के बदलते भूमि उपयोग का अध्ययन नहीं हुआ। अतः प्रस्तुत अध्ययन में इस क्षेत्र का गहन अध्ययन प्रस्तावित है। शोध कार्य में कृषि भूमि उपयोग, कृषि प्रारूप, जनसंख्या, कृषि का आधुनिकीकरण पर प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है। हाथरस जनपद में छः विकासखण्डों का 2017–18 भूमि उपयोग के ऑकड़ों को आधार बनाया गया है। जनसंख्या वितरण से सम्बन्धित ऑकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि जनसंख्या दबाव का स्पष्ट प्रभाव भूमि उपयोग की मात्रा पर पड़ा है। अध्ययन क्षेत्र में किसान सामान्यतः प्राचीन पद्धतियों का प्रयोग करते है जो कि क्षेत्र की दशाओं को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त नहीं है। पानी का अपव्यय रोकने के लिए तालाब की खुदाई करनी चाहिए। जिससे वर्षा का पानी एकत्रित हो और जल स्तर में वृद्धि होगी और पारिस्थितिकीय सन्तुलन बना रहे।

निष्कर्ष

हाथरस जनपद में शुद्ध बोया गया क्षेत्र में वृद्धि हुई है जबकि परती भूमि, कृषि योग्य बंजर भूमि, ऊसर एवं अयोग्य भूमि, वन, आदि में कमी हुई है। वन क्षेत्र लगभग समाप्ति की ओर है। नवीन तकनीकों के कारण कृषि योग्य भूमि का विस्तार बढ़ रहा है। जो कि कृषि और कृषक दोनों के लिए शुभ संकेत हैं, जनपद में जोताकार सर्वाधिक 00–0.5 सभी विकासखण्डों में सर्वाधिक है। सिंचाई के साधनों के विकास होने के कारण शस्य गहनता 142.99 प्रतिशत प्राप्त हुआ है।

संदर्भ सूची

1. कमलेश, एस0आर0 : कृषि भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर, (1966)।
2. तिवारी आर0सी0 एवं सिंह, वी0एन0 (2006) कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2006)।
3. सिंह साबिन्द, पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद (2011)।
4. सिंह, काशीनाथ, कृषि भूगोल मेट्रों पब्लिसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली (2007)।
5. हुसैन, माजिद (2006) कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन दिल्ली (2006)।